



---

---

---

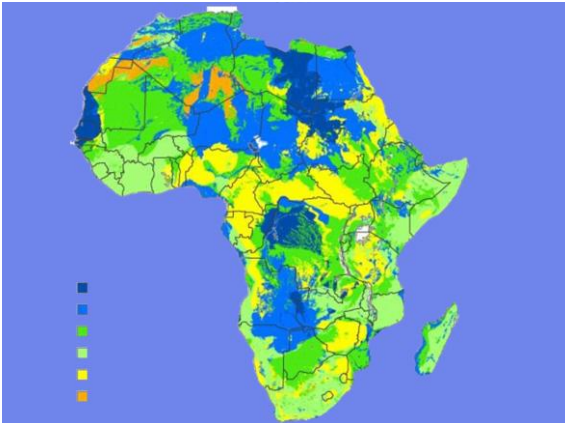
---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

## Matthew 20:28

...the Son of Man did not come to be served, but to serve, and to give his life as a ransom for many.”

---

---

---

---

---

---

---

---

## Obstacles to Serving

1. We are overwhelmed by the need

---

---

---

---

---

---

---

---

*Everyone can't do everything  
but everyone can do  
something.*

---

---

---

---

---

---

---

---

## Obstacles to Serving

1. We are overwhelmed by the need
2. We believe we have to do something big.

---

---

---

---

---

---

---

---

*It is often the smallest things that have the biggest impact.*

---

---

---

---

---

---

---

---

**Who Am I in Christ?**

**Who Am I in the Body of Christ?**

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:1-2

Therefore, I urge you, brothers and sisters, in view of God's mercy, to offer your bodies as a living sacrifice, holy and pleasing to God—this is your true and proper worship. <sup>2</sup>Do not conform to the pattern of this world, but be transformed by the renewing of your mind. Then you will be able to test and approve what God's will is—his good, pleasing and perfect will.

---

---

---

---

---

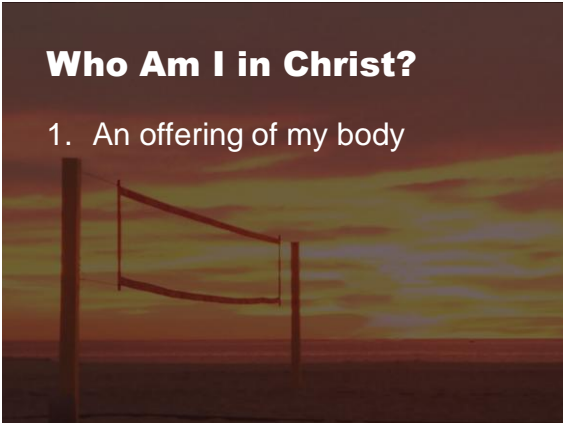
---

---

---

## Who Am I in Christ?

1. An offering of my body



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### Who Am I in Christ?

- 1. An offering of my body
- 2. An offering of my mind

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### Who Am I in Christ?

- 1. An offering of my body
- 2. An offering of my mind
- 3. An offering of my will

---

---

---

---

---

---

---

---

## Who Am I in Christ?

*A transformed recipient  
of mercy and grace who is wholly  
committed to doing the will of God*

---

---

---

---

---

---

---

---

## What is God's will?

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:3-5

<sup>3</sup> For by the grace given me I say to every one of you: Do not think of yourself more highly than you ought, but rather think of yourself with sober judgment, in accordance with the faith God has distributed to each of you. <sup>4</sup> For just as each of us has one body with many members, and these members do not all have the same function,

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:3-5

<sup>5</sup> so in Christ we, though many, form one body, and each member belongs to all the others.

---

---

---

---

---

---

---

---

**What is God's will?  
To serve one another as  
the body of Christ**

---

---

---

---

---

---

---

---

## Prerequisites for Serving

1. Demonstrate Humility
2. Celebrate Diversity
3. Recognize Our Dependency
4. Commit Completely

---

---

---

---

---

---

---

---

### Romans 12:6-8

<sup>6</sup> We have different gifts, according to the grace given to each of us. If your gift is prophesying, then prophesy in accordance with your faith; <sup>7</sup> if it is serving, then serve; if it is teaching, then teach; <sup>8</sup> if it is to encourage, then give encouragement; if it is giving, then give generously; if it is to lead, do it diligently; if it is to show mercy, do it cheerfully.

---

---

---

---

---

---

---

---

### Spiritual Gifts

1. We all have been gifted
2. Our gifts must be used

---

---

---

---

---

---

---

---

Your gifts are not about **YOU**  
Leadership is not about **YOU**  
Your purpose is not about **YOU**

A life of significance is about **SERVING**  
those who need your gifts, your leadership, your purpose.

Kevin Hall, author "Aspire"

---

---

---

---

---

---

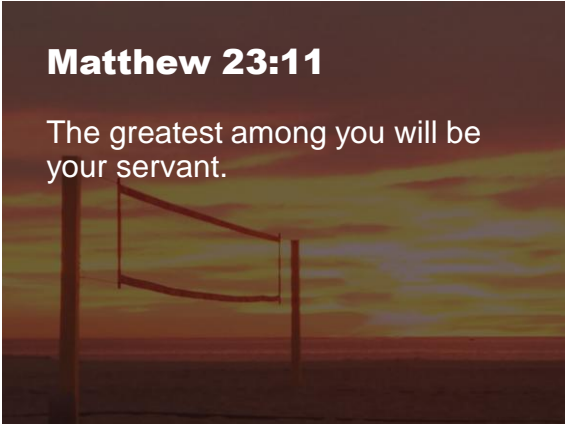
---

---



**Matthew 23:11**

The greatest among you will be your servant.



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---